Prof Sandhya Rani
Head of Department
Department of Economics
Maharaja college, Ara
Class - B.A. Part -1
Paper- 2

Balance of Trade and Balance of Payment

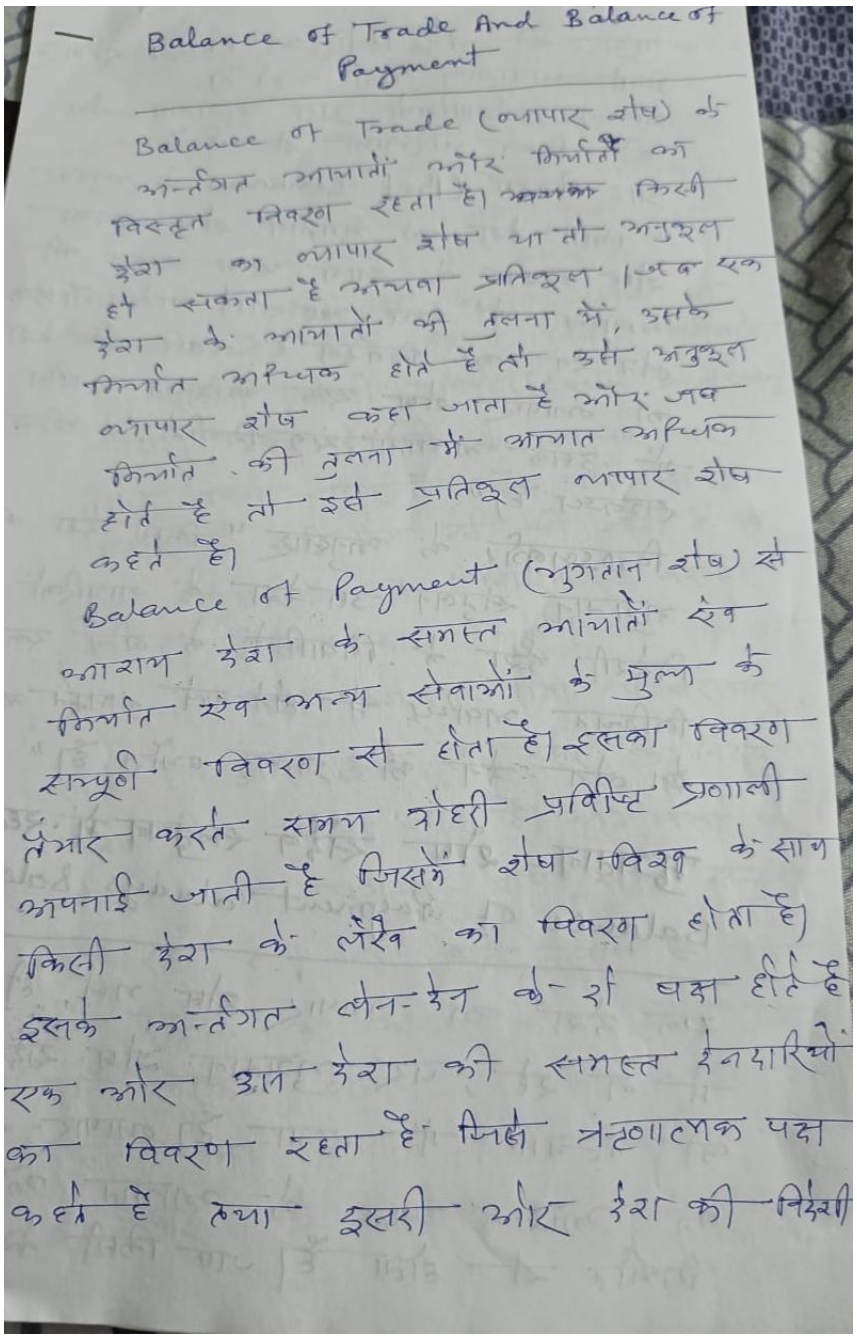

Balance of Trade And Balance of Payment

Balance of Trade (व्यापार शेष) के अन्तर्गत आयातों और निर्यातों का विस्तृत विवरण रहता है। ~~[illegible]~~ किसी देश का व्यापार शेष या तो अनुकूल हो सकता है अथवा प्रतिकूल। जब एक देश के आयातों की तुलना में, उसके निर्यात अधिक होते है तो उसे अनुकूल व्यापार शेष कहा जाता है और जब निर्यात की तुलना में आयात अधिक होते है तो इसे प्रतिकूल व्यापार शेष कहते है।

Balance of Payment (भुगतान शेष) से आशय देश के समस्त आयातों एवं निर्यात एवं अन्य सेवाओं के मुल्य के सम्पूर्ण विवरण से होता है। इसका विवरण तैयार करते समय दोहरी प्रविष्टि प्रणाली अपनाई जाती है जिसमें शेष विवरण के साथ किसी देश के लेन-देन का विवरण होता है। इसके अन्तर्गत लेन-देन के दो पक्ष होते है एक ओर उस देश की समस्त देनदारियों का विवरण रहता है जिसे ऋणात्मक पक्ष कहते है तथा दूसरी ओर देश की विदेशी

अन्तर है जो आय और पूंजी में होता है। आय निश्चित अवधि में एक प्रवाह के समान है जबकि पूंजी समय-अन्तराल में एक संग्रह है। चालू खाते के अन्तर्गत वस्तुओं एवं सेवाओं, ब्याज ~~का विनिवेश~~ एवं लाभांश और एकपक्षीय हस्तान्तरणों को शामिल किया जाता है तथा पूंजी खाते में दीर्घकालीन और अल्पकालीन विनियोगों एवं मुद्रा के आवागमन को शामिल किया जाता है।

भुगतान-संतुलन हमेशा सन्तुलन में रहता है इसे निम्नवत् भी स्पष्ट किया जा सकता है -

"भुगतान-शेष हमेशा सन्तुलन में होता है" का अर्थ है कि चालू-~~खाता~~ लेखा, पूंजी लेखा और सरकारी व्यवस्थापन लेखा की क्रेडिट और डेबिट शेषों का बीजगणितीय जोड़ अवश्य शून्य होना चाहिए। भुगतान-शेष को निम्न प्रकार से लिखा जाता है -

$$B = R_f - P_f$$

जहाँ B = भुगतान-शेष

R_f = विदेशियों से प्राप्तियों

P_f = विदेशियों को किए गए भुगतानों को व्यक्त करता है।

Part-1 Sandhya Rai

और पूंजी खाता दोनों को दृष्टि में रखना आवश्यक है। यदि केवल चालू खाते को लिया जाए तो भुगतान शेष, असन्तुलित हो सकता है। यहाँ इन दोनों का अर्थ समझना आवश्यक है।

चालू खाते (current account) के अन्तर्गत लेन-देन के फलस्वरूप किए जाने वाले अथवा प्राप्त होने वाले उन भुगतानों का समावेश होता है जो चालू (एक) वर्ष में पूरा किए जाते है।

पूंजी खाते (capital account) के अन्तर्गत उन मुद्दों को सम्मलित किया जाता है जिनके द्वारा चालू खातों में प्रविष्ट भुगतान सम्भव होते है अर्थात, आयात निर्यात एवं सेवाओं के बदले प्राप्त एवं देय भुगतानों को सम्भव बनाने वाली मदें पूंजी खाते में सम्मिलित की जाती है। पूंजी खाते से किसी देश की अन्तर्राष्ट्रीय विनियोग अथवा ऋणग्रस्तता सम्बन्धी स्थिति का ज्ञान होता है। इन दोनों में वही

निर्यात का मूल्य, आयात मूल्य से अधिक होता है, तो उस देश का व्यापार-शेष उसके पक्ष में होता है। किन्तु व्यापार-शेष से देश की सम्पूर्ण आर्थिक-स्थिति का ज्ञान नहीं होता तथा इसमें असन्तुलन हो सकता है।

जहाँ तक भुगतान-शेष का सम्बन्ध है, चूँकि इसका विवरण बहीखाते के समान दोहरी प्रविष्टि (Equal Dual Entry) लेनदारी और देनदारी के आधार पर तैयार किया जाता है और यदि सारी प्रविष्टियाँ सही ढंग से की जाती है तो कुल लेनदारियाँ कुल देनदारियों के बराबर होती है। इसका कारण यह है कि लेन देन के दोनों पक्ष योग राशि में बराबर होते हैं और इनको एक दूसरे के विरुद्ध दिशा में लिखा जाता है। अतः लेखा के सन्दर्भ में भुगतान-शेष, सदैव सन्तुलन में रहता है। यह बात दूसरी है कि इन दोनों के अन्तर को, श्रेष्ठ द्वारा पूर्ति करके, समान दिखाया जाता है। किन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि इसप्रकार के सन्तुलन में, चालू खाता

मुद्रा की लेनदारियों का विवरण रहता जिसे ऋणात्मक पक्ष कहते है।
विभिन्न अर्थशास्त्रियों द्वारा भुगतान-शेष की भिन्न परिभाषा दी गई है—
प्रो० बेनहम (Prof Benham) के अनुसार " किसी देश का भुगतान शेष, उसका शेष विश्व के साथ एक समय की अवधि में किए जाने वाले मौद्रिक लेन देन का विवरण है जबकि एक देश का व्यापार शेष एक निश्चित अवधि में उसके आयातों एवं निर्यातों के बीच सम्बन्ध है।"
किण्डलबर्गर के अनुसार " किसी देश का भुगतान संतुलन उस देश के नागरिकों तथा विदेशी देश के निवासियों के बीच एक निश्चित अवधि में होने वाले समस्त आर्थिक लेन-देन का क्रमबद्ध ब्यौरा है।"

भुगतान-शेष सदैव सन्तुलन में रहता है
Balance of Payment always Balances

एक देश का व्यापार-शेष भले ही सन्तुलन मे न रहे, पर भुगतान शेष सदैव सन्तुलन की स्थिति में रहता है। व्यापार-शेष का आशय माल के आयात और निर्यात से होता है। जब किसी देश के